चार्ली चैप्लिन यानी हम सब

लेखक: विष्णु खरे

पाठ का सार : 16 अप्रैल 1989 को चार्ली के जन्म को 100 साल पूरे हो गए। यह वर्ष चैप्लिन की जन्मशती का वर्ष है तथा उनकी पहली फिल्म 'मेकिंग ए लिविंग' को 75 वर्ष पूरे हो गए। चैप्लिन समय, भूगोल और संस्कृति की सीमाओं को तोड़कर लगभग पिछली पौन शताब्दी से लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं। विकासशील दुनिया में जैसे-जैसे टेलीविज़न, वीडियो का प्रसार हो रहा है, नए-नए दर्शक चार्ली की विभिन्न कोशिशों से जुड़ते जा रहे हैं। चैप्लिन की कुछ फिल्में व इस्तेमाल न की गई रीलें मिली हैं। इस कारण करीब 50 वर्षों तक चैप्लिन के बारे में बहुत कुछ कहा जाएगा।

चार्ली की फिल्में भावनाओं पर टिकी होती हैं, बुद्धि पर नहीं। चार्ली का चमत्कार यही है कि उनकी फिल्में पागल खाने के मरीजों, विकल मस्तिष्क लोगों से लेकर आइन्स्टाइन जैसे बुद्धिजीवी सब देख सकते हैं। चैप्लिन ने फिल्म कला को लोकतांत्रिक किया तथा जाति, धर्म, वर्ग व वर्ण की दीवारें तोड़ दी। चार्ली एक परित्यक्ता, दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री के पुत्र थे। चार्ली को भयंकर गरीबी और माँ के पागलपन के साथ संघर्ष करना पड़ा। चार्ली का काल साम्राज्यवाद, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद, व सामंतशाही का काल था। चैप्लिन ने इसी माहौल में जीवन मूल्य पाये, इसीलिए करोड़पति हो जाने के बाद भी चार्ली अपने मूल्य नहीं भूले।

चार्ली की नानी खानाबदोश थी तथा पिता यहूदी थे। इन जटिल परिस्थितियों ने चार्ली को घुमंतू चरित्र बना दिया। चार्ली पर कई फिल्म समीक्षकों, फिल्म कला के उस्तादों और मानविकी के विद्वानों ने सिर धुने हैं। दरअसल सिद्धांत कला को जन्म नहीं देते, बल्कि कला अपने सिद्धांत स्वयं बनाती है। चार्ली की फिल्में देखकर लोग अपना पेट दुखा लेते हैं। चार्ली की फिल्मों ने समय व भूगोल की सीमाओं को गिरा दिया। कला में बेहतर क्या है - बुद्धि को प्रेरित करने वाली भावना या भावना को उकसाने वाली बुद्धि? चार्ली ने भावना को चुना। उसके कई कारण थे। बचपन की दो घटनाओं ने चार्ली पर गहरा प्रभाव डाला।

एक बार चार्ली बीमार थे। तब उनकी माँ ने ईसा मसीह का जीवन बाइबल से पढ़कर सुनाया। ईसा के सूली पर चढ़ने के प्रकरण तक आते-आते माँ और चार्ली दोनों रोने लगे। इसी समय चार्ली के मन में दयालु ज्योति उजागर हुई तथा उन्होंने साहित्य और नाटकों को स्नेह, करुणा और मानवता जैसे समृद्ध विषय दिए।

दूसरी घटना भी एक मार्मिक घटना है। एक बार एक भेड़ कसाईखाने से भाग गई। उसे पकड़ने के प्रयास में सड़क पर ठहाके गूँज उठे। आखिरकार वो गरीब जानवर पकड़ लिया गया। चार्ली रोता हुआ यह कहते हुए घर की ओर भागा कि ये लोग उसे मार डालेंगे। इस घटना ने चार्ली की भावी फिल्मों के लिए त्रासदी में हास्योत्पादक तत्वों के सामंजस्य की भूमिका बना दी।

भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र में अनेक रस हैं, परंतु करुणा और हास्य रस एक साथ नहीं आते। भारतीयों ने हास्य में करुणा और करुणा में हास्य को बहुत व्यापक रूप से स्वीकार किया।

किसी भी समाज में अमिताभ बच्चन या दिलीप कुमार सरीके इने-गिने लोगों को बुलाया जाता है, परंतु चार्ली या जानी वाकर अकसर सबको बुलाया जाता है। सच बात तो यह है - हम सब ईश्वर या नियति के विदूषक, क्लाउन, जोकर या साइड किक हैं। गाँधीजी में चार्ली का पुट था। गाँधी हो या नेहरू, दोनों ने कभी चार्ली का सानिध्य चाहा था।

चार्ली को भारतीयों ने खूब अपनाया। राज कपूर ने भारतीय फिल्मों का एक सबसे साहसिक प्रयोग किया। 'आवारा' 'दि ट्रैम्प' का अनुवाद ही नहीं है, बल्कि चार्ली का भारतीयकरण है। फिल्म 'आवारा' और 'श्री 420' से पहले नायकों को अपने ऊपर हँसने की परंपरा नहीं थी। राज कपूर को चार्ली का युवा अवतार कहा गया है। इसके बाद दिलीप कुमार ने बाबुल, गोपी, शबनम आदि फिल्मों में, देवानंद ने नौ दो ग्यारह, फंटूश आदि फिल्मों में, शम्मी कपूर व अमिताभ बच्चन ने अमर अकबर एंथनी में, यहाँ तक कि श्रीदेवी ने भी चार्ली को अपनाया।

चार्ली की अधिकतर फिल्मों में भाषा का प्रयोग नहीं है, वो मूक हैं। चार्ली चिरयुवा लगते हैं तथा वे विदेशी नहीं लगते। चार्ली के अड़ंगे, खलनायक व दुष्ट औरतें विदेशी लगते हैं तथा चार्ली हमें 'हम' लगते हैं।

भारत में होली के त्यौहार को छोड़कर किसी भी अन्य अवसर पर अपने ऊपर हँसने की परंपरा नहीं है। चार्ली स्वयं पर सबसे अधिक तब हँसते हैं, जब वे गर्व से भरे होते हैं, आत्मविश्वास से परिपूर्ण होते हैं, सफलता, सभ्यता, संस्कृति तथा समृद्धि की प्रतिमूर्ति होते हैं। जब वो वज्र से कठोर व कुसुम से कोमल होते हैं, तब कुछ ऐसा होता है कि उसकी सारी गरिमा सुई चुभे गुब्बारे जैसी फुस्स हो जाती है।

जीवन के अधिकतर हिस्सों में हम चार्ली की टिली लगते हैं। परम शूरवीर पलों में हम पलायन के शिकार हो जाते हैं। मूल रूप से हम चार्ली हैं, कोई सुपरमैन नहीं।

पठित **गद्यांश**

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

(एक)

उनकी फिल्में भावनाओं पर टिकी हुई हैं, बुद्धि पर नहीं। 'मेट्रोपोलिस', 'द केबिनेट ऑफ डॉक्टर कैलिगरी', 'लास्ट इयर इन मारिएनबाड', 'द सैक्रिफाइस' जैसी फिल्में दर्शक से एक उच्चतर एहसास की माँग करती हैं। चैप्लिन का चमत्कार यही है कि उनकी फिल्मों को पागलखाने के मरीजों, विकल मस्तिष्क लोगों से लेकर आइन्स्टाइन जैसे महान प्रतिभा वाले व्यक्ति तक कहीं एक स्तर पर और कहीं सूक्ष्मतम रसास्वादन के साथ देख सकते हैं। चैप्लिन ने न सिर्फ़ फ़िल्म कला को लोकतांत्रिक बनाया, बल्कि दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण व्यवस्था को तोड़ा। यह अकारण नहीं है कि जो भी व्यक्ति, समूह या तंत्र गैर बराबरी नहीं मिटाना चाहता, वह अन्य संस्थाओं के अलावा चैप्लिन की फिल्मों पर भी हमला करता है। चैप्लिन भीड़ का बच्चा है, जो इशारे से बतला देता है कि राजा भी उतना ही नंगा है जितना मैं हूँ, और भीड़ हँस देती है। कोई भी शासक या तंत्र जनता का अपने ऊपर हँसना पसंद नहीं करता।

प्रश्न 1) चार्ली की फिल्मों के दर्शक कौन हैं?

उत्तर : चार्ली की फिल्मों के दर्शक पागलखाने के मरीज, विकल मस्तिष्क लोग एवं आइन्स्टाइन जैसे महान प्रतिभाशाली लोग हैं।

प्रश्न 2) चार्ली चैप्लिन ने फिल्म कला को लोकतांत्रिक कैसे बना दिया?

उत्तर : चार्ली चैप्लिन की फिल्में सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ग व वर्ण के लोग देखते हैं। केवल इतना ही नहीं, विश्व के सभी देशों के लोग देखते हैं। इसलिए कह सकते हैं कि चार्ली ने फिल्मों को लोकतांत्रिक कर दिया।

प्रश्न 3) कौन लोग चार्ली की फिल्म कला पर हमला बोलते हैं और क्यों?

उत्तर : जो लोग समाज में समानता नहीं चाहते; जो व्यक्ति, समूह या तंत्र की बराबरी नहीं चाहते, वे लोग चार्ली की फिल्म कला पर हमला बोलते हैं।

प्रश्न 4) चार्ली चैप्लिन की फिल्में शासकों को क्यों पसंद नहीं आती?

उत्तर : चार्ली अपनी फिल्मों में भीड़ का वो बच्चा नजर आता है, जो आम लोगों की कमियों को तो उजागर करता ही है, साथ-ही-साथ शासकों की कमजोरियों को भी उजागर करता है। इसे कोई भी शासक पसंद नहीं करता।

(दो)

भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र को कई रसों का पता है। उनमें से कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है। जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं। यह संसार की सारी सांस्कृतिक परंपराओं को मालूम है, लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे रस-सिद्धांत की माँग करता है, जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता। रामायण तथा महाभारत में जो हास्य है, वह दूसरों पर है और अधिकांशतः वह परसंताप से प्रेरित है। जो करुणा है, वह अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है। संस्कृत नाटकों में जो विदूषक है, वह राजव्यक्तियों से कुछ बदतमीजी अवश्य करता है, किंतु करुणा और हास्य का सामंजस्य उसमें भी नहीं है। अपने ऊपर हँसने और दूसरों में भी वैसा ही माद्दा पैदा करने की शक्ति भारतीय विदूषक में कुछ कम ही नजर आती है।

प्रश्न 1) भारतीय सौंदर्यशास्त्र में विभिन्न रसों के मेल पर क्या नीति है?

उत्तर : भारतीय सौंदर्यशास्त्र में अनेक रस हैं। उनमें से कुछ रस भारतीय सौंदर्य में साथ-साथ पाए जाते हैं, परंतु करुणा व हास्य रस एक साथ नहीं आते।

प्रश्न 2) चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में ऐसा क्या नया है, जो भारतीय सौंदर्यशास्त्र को अभी सीखना है?

उत्तर : चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में करुणा व हास्य रस साथ-साथ आते हैं। करुणा कब हास्य में और हास्य कब करुणा में बदल जाता है; पता नहीं चलता। भारतीय सौंदर्यशास्त्र में करुणा व हास्य रस एक साथ नहीं आते, ये अभी भारतीय सौंदर्यशास्त्र को सीखना है।

प्रश्न 3) भारतीय कलाओं में करुणा किन पर व्यक्त की जाती है?

उत्तर : भारतीय कलाओं में करुणा अच्छे व्यक्तियों के लिए है तथा कभी-कभी दुष्टों के लिए भी होती है।

प्रश्न 4) भारतीय विदूषकों की क्या विशेषताएँ हैं तथा क्या वे नहीं करते?

उत्तर : संस्कृत नाटकों में विदूषक होते हैं, जिनका कार्य हँसना होता है। ये लोग राजव्यक्तियों से कुछ इस प्रकार की बदतमीजियाँ करते हैं कि हास्य उत्पन्न होता है। विदूषक अपने ऊपर कभी भी हँसते नजर नहीं आते।

(तीन)

चार्ली की अधिकांश फिल्में भाषा का इस्तेमाल नहीं करती, इसलिए उन्हें ज्यादा-से-ज्यादा मानवीय होना पड़ा। सवाक् चित्रपट पर कई बड़े-बड़े कॉमेडियन हुए हैं, लेकिन वे चैप्लिन की सार्वभौमिकता तक क्यों नहीं पहुँच पाए, इसकी पड़ताल अभी होने को है। चार्ली का चिर-युवा होना या बच्चों जैसा दिखना एक विशेषता तो है ही, सबसे बड़ी विशेषता शायद यह है कि वह किसी भी संस्कृति को विदेशी नहीं लगते। यानी उनके आसपास जो भी चीजें, अड़ंगे, खलनायक, दुष्ट औरतें आदि रहते हैं, वे एक सतत विदेश या परदेस बन जाते हैं और चैप्लिन 'हम' बन जाते हैं। चार्ली के सारे संकटों में हमें यह भी लगता है कि यह 'मैं' भी हो सकता है, लेकिन 'मैं' से ज्यादा चार्ली हमें 'हम' लगते हैं। यह संभव है कि कुछ अर्थों में 'बस्टर कीटन' चार्ली चैप्लिन से बड़ी हास्य-प्रतिभा हो, लेकिन कीटन हास्य का काफ्का है, जबकि चैप्लिन प्रेमचंद के ज़्यादा नज़दीक है।

प्रश्न 1) चार्ली की फिल्में मानवीय क्यों होती है तथा मानवीय का क्या अर्थ है?

उत्तर : चार्ली की अधिकांश फिल्मों में भाषा का इस्तेमाल नहीं होता, इसलिए उनकी फिल्में अधिक मानवीय हो जाती हैं। मानवीय का अर्थ है - मानवीय भावों से युक्त। चार्ली की फिल्मों में भाषा नहीं होती, पर मानवीय भाव बहुत सुंदरता से उभरकर सामने आते हैं।

प्रश्न 2) चार्ली की फिल्मों की क्या विशेषता है?

उत्तर : चार्ली अपनी फिल्मों में चिर-युवा या बच्चों जैसा दिखता है तथा उनकी फिल्मों की विशेषता है कि उनकी फिल्में हर संस्कृति को अपनी लगती हैं, विदेशी नहीं।

प्रश्न 3) चार्ली की फिल्मों में खलनायकों और दर्शकों में क्या संबंध है?

उत्तर : चार्ली की फिल्मों में नायक के आसपास जो भी अड़ंगे लेते नजर आते हैं, दुष्ट औरतें आदि नज़र आते हैं, दर्शकों को वो सब विदेशी या परदेशी नजर आने लगते हैं।

प्रश्न 4) चार्ली के कारनामे हमें 'मैं' न लगकर 'हम' क्यों लगते हैं?

उत्तर : दर्शकों को चार्ली के सारे संकट ऐसे लगते हैं जैसे वे सब संकट हम पर भी आ सकते हैं, इसीलिए चार्ली 'मैं' से अधिक 'हम' लगते हैं।

(चार)

अपने जीवन के अधिकांश हिस्सों में हम चार्ली के टिली ही होते हैं, जिसके रोमांस हमेशा पंक्चर होते रहते हैं। हमारे महानतम क्षणों में कोई भी हमें चिढ़ा कर या लात मार कर भाग सकता है। अपने चरमतम शूरवीर क्षणों में हम क्लैव्य और पलायन के शिकार हो सकते हैं। कभी-कभार लाचार होते हुए जीत भी सकते हैं। मूलतः हम सब चार्ली हैं, क्योंकि हम सुपरमैन नहीं हो सकते। सत्ता, बुद्धिमत्ता, प्रेम और पैसे के चरमोत्कर्षों में जब हम आईना देखते हैं, तो चेहरा चार्ली-चार्ली हो जाता है।

प्रश्न 1) 'जीवन के अधिकांश हिस्सों में हम चार्ली की टिली होते हैं।' कैसे?

उत्तर : जैसे चार्ली जब आत्मविश्वास से पूर्ण होते हैं, सफलता, सभ्यता और समृद्धि की प्रतिमूर्ति होते हैं, तब ऐसा कुछ होता है कि उनका सारा गर्व नष्ट हो जाता है। ऐसा ही अधिकांश लोगों के साथ होता है। इसीलिए हम चार्ली के टिली हैं।

प्रश्न 2) चार्ली के साथ अकसर किस प्रकार की घटनाएँ घटती हैं?

उत्तर : चार्ली के रोमांस हमेशा पंक्चर होते रहते हैं। कोई भी उन्हें चिढ़ाकर, लात मार कर भाग जाता है। वो अपने शूरवीर क्षणों में पलायन के शिकार हो जाते हैं। कभी वो लाचार होते हुए भी जीत जाते हैं।

प्रश्न 3) 'चेहरा चार्ली-चार्ली हो जाता है' इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर : 'चेहरा चार्ली-चार्ली हो जाता है' का आशय है कि हम साधारण लोग हैं। जैसे चार्ली सफलता, सभ्यता, संस्कृति, समृद्धि आदि के चरम पर होते हैं, उस समय ऐसा कुछ होता है कि चार्ली का गर्व नष्ट हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जब हम सत्ता, बुद्धि, प्रेम आदि के चरम पर होते हैं, उस समय ऐसा कुछ होता है कि हमारा सारा गर्व नष्ट हो जाता है, हमारा चेहरा चार्ली-चार्ली हो जाता है, हम में व चार्ली में कोई अंतर नहीं रहता।

प्रश्न 4) सुपरमैन व चार्ली में क्या अंतर है?

उत्तर : सुपरमैन एक काल्पनिक पात्र है। उसके पास विशेष शक्तियाँ हैं तथा वो प्रत्येक स्थान पर विजयी होता है एवं खलनायक उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। चार्ली एक साधारण व्यक्ति है। उसमें अनेक मानवीय कमजोरियाँ है तथा उसके जीवन में अनेक बाधाएँ, असफलताएँ आती रहती हैं।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) लोगों ने लड़कों की टोली को मेंढक-मंडली नाम किस आधार पर दिया?

उत्तर : दस-बारह साल से सोलह-अठारह वर्ष के बच्चे नंगे बदन, उछल-कूद करते, शोर-शराबा करते पानी माँगते हैं और गली में हुए कीचड़-कादे में लोट लगाते हैं। कुछ लोग इनसे चिढ़ते हैं तथा इन्हें मेंढक-मंडली कहते हैं।

ये बच्चे अपने आप को इंदर सेना कहते हैं। इनका मानना है कि ये इंदर देव के सैनिक हैं। लोग इन पर पानी फेंकेंगे, तो इंदर देव प्रसन्न होकर बादल के रूप में सबको पानी देंगे।

प्रश्न 2) जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर : जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को अनेक प्रकार से सही ठहराया :-

I - जीजी का कहना है कि हम इंदर देव पर पानी का अर्ध्य चढ़ाएंगे तो वो हमें वर्षा के रूप में पानी देंगे।

II - त्याग की भावना से किए गए दान का ही महत्व होता है। अगर किसी के पास लाखों-करोड़ों रुपए हैं और वो अगर कुछ रुपए दान कर देता है, तो वह दान नहीं। बल्कि जिस चीज की हमें जरूरत है, उसी चीज का दूसरे के कल्याण के लिए दान करना ही असली दान है। जैसे पानी की कमी होने पर पानी का दान ही वर्षा लेकर आएगा।

III - किसान चार-छह सेर गेहूँ खेतों में बोता है। बदले में तीस-चालीस सेर गेहूँ मिलती है। ठीक उसी प्रकार थोड़े से पानी की बुवाई से वर्षा के रूप में खूब पानी मिलेगा।

प्रश्न 3) “पानी दे गुड़धानी दे”। मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

उत्तर : पानी के साथ गुड़धानी की माँग इसलिए की जा रही है कि मेघ बरसेंगे तो ईख व धान की अच्छी फसल होगी। ईख व धान से ही गुड़धानी बनती है। अर्थात् हमारा देश कृषि प्रधान देश है। वर्षा होगी तो देश की अर्थव्यवस्था भी सुधरेगी। इसीलिए मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग भी की गई है।

प्रश्न 4) “गगरी फूटी बैल पियासा”। इंदर सेना के इस खेल-गीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों हुई है?

उत्तर : वर्षा न होने के कारण जीव-जंतुओं को भी पानी नहीं मिल रहा, वो प्यास से मर रहे हैं। इसीलिए गीत में कहा गया है कि वर्षा न होने के कारण बैल प्यासे हैं। इस कारण कृषि व्यवस्था प्रभावित हो रही है। अर्थात् वर्षा न होने के कारण प्रकृति प्रभावित है, सभी जीव-जंतु प्रभावित हैं तथा अर्थव्यवस्था भी प्रभावित है।

प्रश्न 5) इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है?

उत्तर : भारत एक कृषि प्रधान देश है, इसलिए देश पानी पर निर्भर है। इसीलिए नदियों का भारतीय जीवन में बहुत महत्व है; इसीलिए हर शुभ अवसर पर हम नदियों का नाम लेते हैं। इंदर सेना भी सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है। गंगा भारत की पवित्र नदी है। इसका हमारी संस्कृति से बहुत गहरा संबंध है।

हमारे देश के मुख्य शहर नदियों के किनारे ही बसे हैं। हमारा सांस्कृतिक व सामाजिक विकास नदियों के किनारे ही हुआ है, जैसे गंगा नदी के किनारे हरिद्वार, बनारस, इलाहाबाद, कोलकाता आदि मुख्य नगर बसे हैं।

प्रश्न 6) रिश्तों में हमारी भावना शक्ति का बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करता है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

उत्तर : रिश्तों में हमारी भावना शक्ति बँट जाती है, सत्य को खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति कमजोर हो जाती है, यह कथन बिल्कुल सत्य है। लेखक जीजी से भावनात्मक रूप से जुड़ा है। इस कारण जीजी सारे धार्मिक कार्य लेखक से करवाती है। लेखक भी जीजी की भावनाओं को ठेस न पहुँचे, इसलिए जीजी के कहे अनुसार सारे कार्य करता है।

जब इंदर सेना पर पानी फेंकने की बात आई, तब लेखक की तर्कशील बुद्धि ने इसे अंधविश्वास कहा और कहा कि वह पानी नहीं डालेगा। वह जीजी से नाराज भी हो गया। परंतु जीजी के तर्कों के आगे वह कुछ न बोल सका। लेखक जीजी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता था।

इसलिए सिद्ध होता है कि भावनाओं के आगे सत्य खोजती बुद्धि की शक्ति कमजोर हो जाती है।

प्रश्न 7) दिनोंदिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवा वर्ग 'काले मेघा पानी दे' की इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकता है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर : पानी के गहराते संकट से निपटने के लिए आज के युवक बहुत कुछ कर सकते हैं। पानी को सुरक्षित करने के लिए युवक कई कार्य कर सकते हैं। जैसे घर-घर में वर्षा के जल को इकट्ठा किया जा सकता है, गाँव में तालाब खुदवा सकते हैं, भूमि के जल के स्तर को बढ़ाने के लिए यत्न किए जा सकते हैं।

प्रश्न 8) लेखक इंदर सेना पर पानी फैंकने का समर्थक क्यों नहीं था? उसके रूठ जाने पर जीजी ने उसे क्या कहकर समझाया?

उत्तर : लेखक इंदर सेना पर पानी फैंकने का समर्थन इसलिए नहीं करता क्योंकि यह उसे अंधविश्वास लगता है, पानी की बर्बादी लगती है।

लेखक जब जीजी से रूठ गया तो जीजी ने कहा कि कुछ पाने के लिए पहले अपनी जरूरत की चीज का त्याग करना पड़ता है। जीजी ने यह भी कहा कि किसान कुछ गेहूँ बोता है, बदले में कई गुना गेहूँ पाता है। इसी प्रकार पानी का थोड़ा दान करने के बदले बादल रूपी फसल उत्पन्न होगी।

प्रश्न 9) सूखे के कारण कैसी स्थिति हो जाती है?

उत्तर : सूखे के कारण पानी की कमी हो जाती है। जीव-जंतु और प्रकृति सभी पानी के लिए तरसने लगते हैं। खेतों की मिट्टी सूख कर पपड़ी बन जाती है। कुएँ व जल के स्रोत सूख जाते हैं। घरों में पानी समय पर आता है और बहुत कम समय के लिए आता है।

प्रश्न 10) लेखक ने लोक प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहकर उनके निराकरण पर बल दिया है। इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर : पाठ में लोक प्रचलित विश्वास का वर्णन किया गया है। पानी नहीं बरसने पर इंदर सेना के नाम पर गाँव के बच्चे घर-घर जाकर पानी माँगते हैं और लोग इन पर पानी फेंकते हैं, ये सोच कर कि इनको दिया गया पानी इंदर देव को प्रसन्न करेगा और वर्षा होगी।

लेखक इंदर सेना पर पानी फेंकने को पानी की बरबादी और अंधविश्वास मानते हैं। लेखक की सोच है कि इस तरह के अंधविश्वास आज खत्म होंगे, तभी देश का विकास होगा।

प्रश्न 11) 'काले मेघा पानी दे' पाठ की इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : पाठ की इंदर सेना युवाओं को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा दे सकती है। युवक अगर सामूहिक प्रयास करें तो समाज की कई बुराइयों को समाप्त कर सकते हैं। युवक अगर संगठित होकर वर्षा के जल को इकट्ठा करने का प्रयास करें तो उस जल से पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले जल संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है। केवल इतना ही नहीं, शिक्षा के क्षेत्र में भी वो महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

* * * * *